

DPN 6788

Title : मेसफ़ / ME SAPHU

Run. No. 7513

Cat. No. 17

Micro. No.

Subject Saṅgīta

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 20 x 16

Folios 18

Lines (in a page) 18

✓
Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor ✓

बाबानानी वैद्य, रूप

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / copy neel made

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

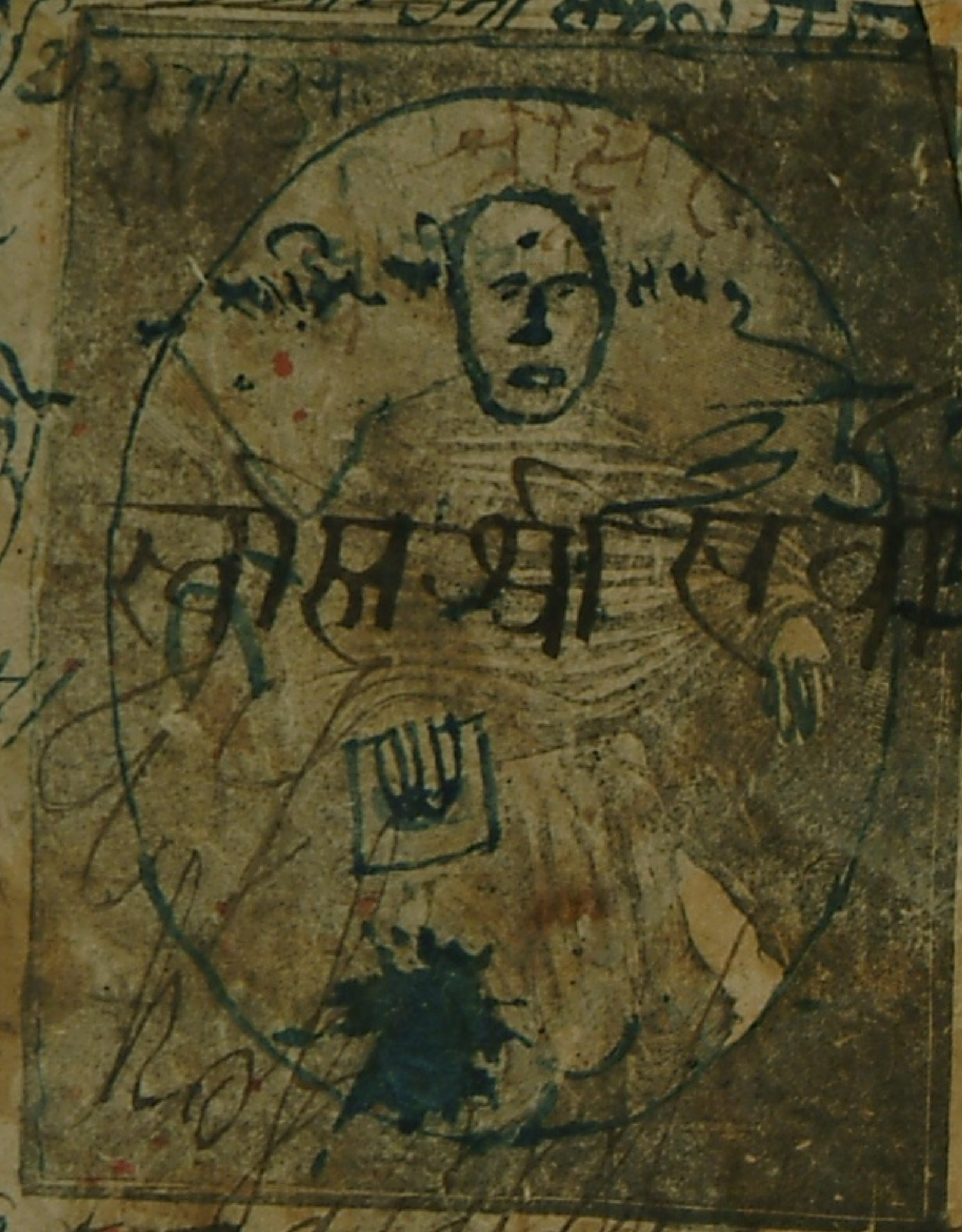
✓
Beginning, colophon, post-colophon :

जय शिव उंकारा हर शिव उं कारा ब्रह्मा विष्णु सदाशिव और चंगे गौर
ॐ हर हर महादेव ॥ ३ ॥

20
15
10
5
0
CMS 5 10 15 20 25 30

श्री १००० श्री लोमकोस
लोमकोस

BIDYASAGAR
EXERCISE BOOK.



Name _____
Address _____
School or _____
Class _____

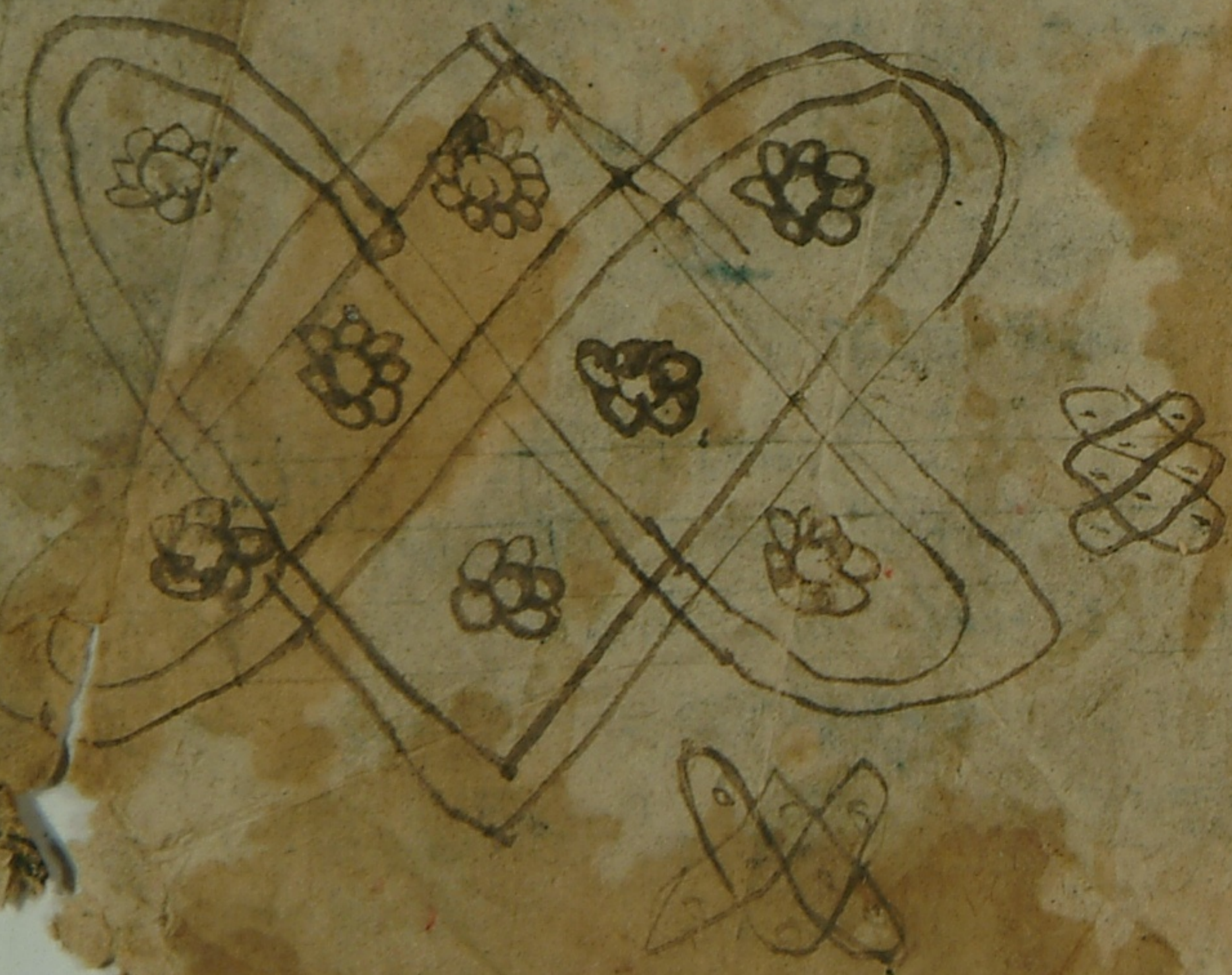
SHIB CHANDRA SINGHA.

STATIONER AND ORDER SUPPLIER.

No. 163, OLD CHINA BAZAR STREET,

CALCUTTA.

[Faint handwritten text, likely bleed-through from the reverse side.]



ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ जयशिव ॐ काश हर
व ॐ काश वं ह्या विष्णु सदाशिव और धर्म गे गोर ॐ ह
माहादेव ॥ ॥ ॥ एव न ए चतु ए न ए पंचानना ए जे
हं सासन गरु दसन वृष पाहन संके ॐ हर ३ माहादेव
॥ दो भुज चार भुज अष्ट भुज दस भुज नृ नमः सहे ॥ ती
पर चत्वारंशं ॥ एधा नै मे धर ता भव सागर त र ना ॐ हर ३ म
हादेव ॥ ॥ ॥ अक्षमाला वन माला दु दु मा ला चार ॥ ॥
त्रिपुरारे र मु ए रे शिव कं ए क म ला वारे ॐ हर ३ माहादे
व ॥ ३ ॥ सितो वर पीतो वर व्याघ्रो म्बर अंशु ॥ शनै का
दि क व्याशा दे क भुता ई क सं गे ॐ हर ३ मा हा देव ॥ ४ ॥
दण्ड कमण्डल चक्र त्रिशूल धर ना ॥ जग कर ता जग भर ता
त्री भुवन जग मोह ॐ हर ३ मा हा देव ॥ ५ ॥ सीव जी के का
न मं कृ य ल ग ले मोती येन माला ॥ जता पे ग ड्डु वि र ग
वरे मृग दाला ॐ हर ३ मा हा देव ॥ ६ ॥ ब्रह्मा धी द्यु स
शीव अंतर नं ही कर ना ॥ दुरव हर ता सुख कर ता युग
पालन कर ता ॐ हर ३ मा हा देव ॥ ७ ॥ श्री स धी पो नी
नी म ड्डु ल गा वे नृ प कर त भैं रं ॥ वा ने तो ताल
मृ दं डु और वा जे द व ह ॐ हर ३ मा हा देव ॥ ८ ॥ ब्रह्मा-

20

15

10

5

खलिगीसजी

॥ ४ ॥

देखता ताल दार

जगमें एक सार है धर्म धर्म धर्म ॥ करो परो पका के करम करम
करम ॥ १ ॥ मानुष की देह पर के हरे नाम ताली पाविर
आजनमग मादि पाशम शरम शरम ॥ १ ॥ तेरे शरीर में
है दिवा जो तई स की गुरु के वचन से समझे मरम मर
म मरम ॥ २ ॥ दुनी पांकी सवि वसु नाशवानधीर न
हो ॥ स्वपने शमान देखले भरम भरम भरम ॥ ३ ॥ व्यापक
है सबी वीख मे परं धंख न ले ॥ वलाने द मोले मोश
पद परम परम परम ॥ ४ ॥

ॐ वांमी दे न

रागती ताला ताला
मेरी मेरी को न करे सो नै जा ॥ १ ॥ मेरी को न मेरे नो
रुद्ध का न है ॥ देव रूपाम की आता मेरा ओर
का म है ॥ १ ॥ ॥ दोती या बोल ॥ सुनरी जात
को न करे मेरी आन ॥ को न सहाये नै निभास ॥
ओ मेरे दोती पद सत की

ययलो अहम म ॥ धर्म सी मो

॥ ५ ॥

राग इति नरूप लोभ
करम गती तारे नाही तरे ॥ १ ॥ का हाव से रवी का हाव से रा
सी रवी ससी आन से नोग पारे ॥ १ ॥ काम ॥ रित मे मरु की अं
घना तुत पारे ॥ का हाव से ॥ २ ॥ करम ॥ हरी चन्द्र जैशे राती रा
ती चको पाती नरे ॥

राम सुरमग ताल चमार मृदंग
जय कर नाथ जी ॥ १ ॥ अफ नी सर मै अफा ॥ जय करे ॥
अफ ने सर न मै ली जे प्रभु वीन को रन आस ॥ प्रभु मे
री कृ पाक रोज गरी खर ॥

राग थीय तर
मे तो फरों गी पर हरि कन वान ॥ जो तुम भोवे सेव कर तु है ॥
मे तो फरों गी पर वे दरी वल वान ॥ ऐसे वचन मे तो राम
वलवान ॥ १ ॥ की कुरा ॥ १ ॥
हे हरी मेरी ने आ पल लग को ॥ भव सागी के भवत कन
ते हे देव न कर प्यो ॥ दोती मान बडा है पादि मुख मे नती हा पीना पो
न मो रहे नाथ ह मोती न की मरे सहा ॥ मात तात भाव न
मुमुत मो रहे दुमी पाणि ॥

राग आसी
हाकु जातुं कं पुं मुं पुं पुं ॥ १ ॥ पय दि य थं थं थं ॥ १ ॥
हाकु जातुं कं पुं पुं त्वा आ ध पु ता दि पर्थ थं थं ॥ १ ॥

राजजल ॥ ॥ गहृतस्वीरप्रियेनारि ॥ अहोसीधारन्योमहीभारी
॥ सवेकलमलकलकृष्णारिउज्जालोवर्णचंपाको ॥ १ ॥ रत्नीमुखी
मधुरवानीलीन्यासकौवेमनैचोरि ॥ वदनचन्द्रीसरिरगोरिस
रभाकासकीजेरि ॥ २ ॥ अहोहृयेनीदातमाथीभमररंकास
रिकाती ॥ वनेकानेजनकपुरमाअहेगाजलसफसुमा ॥ ३ ॥
रगवोहनी ॥ बोरहलज्जोमनमा मताजोगीकुंड ॥ यतीवींतीगदिवेस
धेनहोका ॥ कृष्णकृष्णगामपुकारेगोवीरुतामपुकारोहरिही
आभेसादितारिंसातोरोहीलाचपुर्नवसुगोस्नान
रेवतीचवर्जयुडतगत्रयम् ॥ ८ ॥ ॥ रीतूनिथोचरज
निवारचरिवभोमयो ॥ स्नानचरणगोनोंपोकुंदिजभो
जनसंयुतम् ॥ २ ॥ ॥ रोगस्नानकोसारदाम ॥ ॥ गोल्पो १
वाफे १ मताकिमाथंकुदि १ स्वाकिमाथंकुदि १ वस्त्रवे १
तुङ्गसोकृत्पाहकगकापकोद १ ३ ॥ अर्धमासस्मर १
सिजलाभुपा १ पंचपल्लव १ पंचरत्न १ पञ्चगव्य १
निध १ जल १ कसुकुम्भको

जीगोशापुनम

ॐ नमः ॥ कर स्वां गुष्ठमुले याचमनोजी वराक्षि नो ॥
तचेतेयां सुखं दुखं जये कायस्य पंतिणि ते ॥ ॥

[illegible]

20

15

10

5

0 C.MS

5

10

15

20

25

30

119211

119211

॥ २९ ॥

न ह क आ वां क न ओ क तिं प्र क तो क न ई नि आ
ठ ठा उ मा प रो शा ग नु ॥३॥ ॥ ॥ ॥
ना ना सा ख वि रो ना नां अ ने क शा ख न प ह का अ ल्प मे ध
सौ सु स्म वृ वि म या का वै द्या नौ वै द्य ह रू को ना द्या दि
ना दि आ दि ग रो या का अ व प रो शा ख अ प रो शा क प
नौ सु खार्थ सु ख का नौ मो त ही नौ च य ले प्र भ वं
तो हुं द न भ नी क न क ह या को ह ॥ ॥ ॥
आ द्य ता ह ता व त पे ह ना र का वि ज्ञा ना दे व ना र जा नौ ल
मा नु वा त पी त क फ ज नौ ता नौ वा त पी त क प र इ नौ
ह रू ले ज ना या का आ त पू नां र ग नां र ग नां र ग नां र ग
सा ध्या सा ध्य क ष्ट सा ध्य सा ध्य अ सा ध्य क ष्ट सा ध्य इ नौ
ह रू को स भे र का वि ज्ञा नां भे र स रू त वि शेष ज्ञा न क न
सु क र त्वे न स ह ज ले भि य णि भे ४ वै द्य ह रू ले अ व क षे
ते प्रा प्र हुं द अ त र व य स्का रण ले ता व त पे ह नि
रूप्य ते त्पो ना दि का ज्ञा न क रण व र्ण ना ग रो ह ॥ ॥ ॥

वैद्यः वैद्य जोहो नादिज्ञानं विना नाथो ज्ञान न भैक
न लोक लोक मा पूज्य तो मान भीषक न नव ज्यत्पा

काहुँ देन अतः यत्कारनेले पनो अती प्रयत्ने न असं
 तयत्न पुर्वकैले बुद्धि मान नर १४ कुक्षी मान मनु
 य जोह सो नाशे जानै नादि जानक न शिष्ये तसो क
 नु मनी कने कोहया कोह ॥ ॥ ॥
 यथा जसे बोधहि नंगा खं बोधन भया को साख सो
 आहुँ देन लवन विना नु न न भया को भोजन खा
 ने वल जोह सो सो नाहुँ देन यथा जसे पतीहि ना पनो
 न भया को नाशे जोह सो सो नाहुँ देन तथा नै नै ना
 दि वी ना नाशे जान न नै कन निषक वैद्य जोह सो सो
 मोह देन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यो ४ जे नु नु वैद्य नाशे नाशे पोर ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 पोर ५ आने वादनी खिरु को खको पने लेखने ले
 खन पनो नु वैद्य तो जी देन न नै सते सा मु ॥ ॥ ॥
 वैद्य जोह सो वैद्य सो अयले जे तु घानी कन आशु वा
 देनी मारयनी मार रह सुवैद्य तु तसा वैद्य जोह
 सो न वसो न न सो ना पनो पाई देन ॥ ॥ ॥
 आशु वैद्य सवैद्य रोग सु संपने एग रह माना
 दि नाशे भयो जिह्वा समि हा को तु प्या न

यो नै नै आधा भयो प्रती पी साप भयो आर्त की ह्री हृ
 को ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 को ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 पश्चात् पछी वात दृग्गति तेगी कन पी की सिये त
 ओ लधी कर्म गुरु मनी कन क हा के ॥ ॥ ॥

यः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ना नादी शान न जानी कन वैनी श्रय हो चि
 कि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 स ते ह्या वैद्य जोह सो लं हरी धन कन
 नै वल भते पाई देन धर्म धर्म कन न व
 ल भते पाई देन वैनी श्रय हो यलः की
 ती कन न पाई देन धनी कन कहो या
 कोह ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हे वैद्य ४ हे वैद्य राज पुर्व पैह नाश्या नादि को मुत्र
 स्य पि साव को जिह्वा या जीह्वा को पोर ५ नै पोर ५ कन
 कुरुग नु त जाने ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

या पद्मोद्गर्गो रोगो को सुखा वह सुखी देने मया का
 ओस धी ओस धी कन दे हो देने का मगनु मनो
 कन को हिया को ॥ ॥ ॥ ॥
 यथा जल विराग तात्रो वीना मार ह्या का ताले सु
 की नृ रागान संपूर्ण गगन प्रभास ते प्रकास गद्ग
 द तथा वल्लह सगता नाद सा त मार ह्या का नादो ल
 सर्वान् रोगान संपूर्ण गगन प्रकास ते प्रकास का
 गद्गद मनो कन को हिया को ॥ ॥ ॥ ॥
 नाल लक्ष न भुजात्वा नादो लक्ष न गगन जानो कन यस्तु
 जो न वैद्य ता निदान ग्रंथ का क्य त निदान ग्रंथ का वा
 क्य ल मात्रो वी कस्तो आ मे त ओस धी कन गद्गद
 भने स ते स्ना वैद्य जो ह सो मूढ इ तो मुखे भनो कन के
 ती ते को हिय ॥ ॥ ॥ ॥
 वैद्य सतम भुज मय गजो ह सो निदान पंच का दी नो नो
 दान पंच क को अथा त निदान पूर्व रूप पद पशुय संप्रा
 पिश निहृ को लक्षण लक्षण के न जायो जाने ते स्ना प
 नो नाथे तु नाथे जान कन प्रनी सवली कृत्य सामिल
 गोर खलु नो स च य ले चिकी सा ओ धी कन अवे रत

स

मनु भनो कन क हीया को ॥ कियत च पि च चिह्न सु रोग हृद
 को के हि चिह्न हृद कन ता ते सु अपी जाने द द्वा पनी चिकि
 त्सित न ओ स धी कन गगे द्वा मा पनी नि स्फुली नि स्फुली
 कन पनी जाय ते हृद तस्मात् ते स्कार एते यत त यो
 नादी ग्याण कन यक चेतसा एक चित गगे र भुज सुने
 र ओ स धा दी का या गनु भनी कन क हिया को ॥ ॥ ॥
 तत्र ताहा आ दो पही ले ना ता तत्रानु सारे न अनेक ग्रंथ का
 अनु सारे भि स क आ नंदा यती वैद्य हृद लाई आ नन्द हो
 स र्भना का निमित्त अती प्रयत्न त अस त यत्न पूर्व कले
 ना दी परोक्ष ना दी को परोक्ष कन प्रो चते क ही ॥ ॥
 क चित क ही नृ ग्रंथानु संधानात् ग्रंथ पकूठ ना ले ना दी
 ग्या नं हृद को ची त क ही दे स काल वी भा गत दे स काल
 को वी चा ले ना दी ज्ञान हृद को ची त क ही प्र क नो न्ना
 पी प्र क रण का व स ले पनी ना दी ज्ञान हृद अथा त क ही
 आ क्रा उ र्धा का जो र ले वी चा ले ना दी ज्ञान अपि ना दी
 ज्ञान पनी भवे त हृद ॥ ॥
 स दु रोग पदे सा स दु र का उ पदे स ले दे व ताना प्र सा
 दतः दे व ता हृद का प्र सा द ले पनी प्रा य ह व दु धा ले म्ये क

संपूर्ण नादीपरीचयः नादीजानकोपरीचयः जोह सोपु
 गयेतापर्वजत्रकापुगयेलेमात्रेजायतेहुँहभनीकनकही
 याकोह ॥ लोकेयसलोकमानादीपरीचयः नादीजानको
 परीक्षाजोह सोकुआपिकहीपुतिनचइश्यतेदेखिदेन
 तेनतेस्काएगलेयतजोह नादीजानजोह सोअत्रआहा
 कथ्यतेकहीह ततत्यानादीजानकनउतमे ४ उतमवेद्य
 हहलेयसर्गथमासमाध्ययमः समाधानभयेर नादी
 ज्ञानसिकनुभनीकनकहियाकोह ॥२२॥
 इह आहा सतर्तवारवा नादीनादीहहको गतय ४
 गतीजोह सोपुथकवेगलावेगलेपरीक्षणीया ४
 परीक्षागर्नुअध्यानमात्रेन केवलार्थपठनालेमात्री
 नादीजाननादीजानकननच भवेतहुँदेनभनीकन
 कहीयाकोह ॥२३॥
 शास्त्रपठनादीपीनादीजानजोहनाकानिमित्तशास्त्र
 मात्रेवठेपनीनचहुँदेनवहुँभुतकारनात नादी
 ज्ञानसर्वधीकुएमात्रेगएपनीनहुँदेनमनुस्या
 नीमनुस्यहुँकोनादीग्यातेनादीज्ञानजीनाकानिमि
 त्तअभ्यासकार्नीपरम अभ्यासेनिकाएगभिथा

कोहभनीपुगाजानहहलेकहीयाकोह ॥
 वेद्यवेद्यजोह सोईमायोनादीगतीकोकानतिकन
 ज्ञात्यजानाकानिमित्तयोगाभ्यासवदेकत ४ योगाभ्या
 सगोज्ञाननादीज्ञानहुँनसकदह अन्यथाअभ्यासन
 गीकनकोहिहीउपायेरपिकोहिउपायहहले नीनश
 क्यतेनादीज्ञानजीनसकिंदेन ॥२४॥
 जलजलजीनुभयो स्थलस्थलवासिजीनुभयो नभश्चा
 रिआकाशमाहिइनेभयाकाजिधानोर्जीनुहहकागती
 मि ४ सहगतीहुँले सीगनादीनादीहहकोगतय ४
 गतिजोह सोभिजलक्षना ४ भिन्नभिन्नभयाकाहा
 क्षनहहकनहिनिश्चयलेउपमीर्ययेउपमानमोए
 नादीज्ञानहुँहयसोमगोह नादीज्ञानहुँदेन ॥२५॥
 तत्र ताहावेचक्षणे ४ बुद्धो मानवेद्यहहलेकस्यवेका
 कोहकगीत ४ कलोगतीह मनोकणावेजातव्यावो
 चालेजोनु तच्छालं सोजानहुँनेशास्त्रकनसहुँगे
 जीनशालीन ४ ज्ञानवानशास्त्रजीनेभयाकासहुँहुँ
 देरीवनअध्येतव्यं चत्यानाहे ज्ञानहुँनेशास्त्रकनप
 हुँदेरहुँनुभनीकनजीनेहहलेकहीयाकोह ॥२६॥

कल्याण मणिकल्याण धुनवा अथवा ओषध अथु भक
नपनी नाथे नाथि जोह लापुट स्पष्ट गोर प्रकासयत
प्रकाशाह दन कालीकें दो शिष्ट्या त काल विशेष ले
मृजो गगहृको वखत अनुसार ले सापौ मो नाथि पनी
बोलक्षम भवे त विवलक्षण भया को हं दन ॥१८॥
यत जो न न मृजे नो ए गोनया कामनुष्य को नाथि नाथि
जोह सो पुष्पाण तुलक्षण भया को हं द तथा से से प्रका
र कले मृजो पुष्ट ता यो रोग भया को मनुष्य को नाथि ना
थि जोह सो न हं दे मृज त ४ यस्कार न ले वय ४ मेर का
ल वखत अनुसार मृजो गगहृको भेदे ४ भेद ले सापौ
नाथि जोह सो भिन्न भाव भिन्न भाव क न वि भ ते धार
णा गदेह अथो त वि परा त भाव क न धारणा रं गेह ॥१९॥
अत ४ यस्कार न ले प्रात ४ बुद्धि मा न्वेद्य जोह सो त
नु न्या नाथे जाणा क न सर्वथा से सो साव काली को संप
र्ण काल माल्तुणे ४ नाथे को लक्षण जोह सो मती मान
बुद्धि मानु वेद्य जोह सो सुसमाहो त ४ से को चित्त गोर
जात नाथे जान जोणा का नीमी नय ते तय न गेह रं हं न
भनी कन को ह्यो को हं न ॥२०॥ ॥११११११॥

हृदया भया ४ हृदय का आश्रय नया का वम प ४ नाथे जोह सो आश्रय
त कायं सपूर्ण शो मा पीया प्य कै ला क नय र शानो न स्वात ४ र
क्त जोह सो लो नादा ग वं हं प ४ वं हं द न च ता ४ तीने रक्त वर ना
ले सीरी शरीर कण पोषक तो पुष्ट कणा गेह दन ॥२१॥ ॥
हृदया कुचणा त सोहो हृदय क म म को खु म बो रणा ले को
यत के हो रक्त रक्त क न ड सु त ५ फेर धाम नो म सु ल ना
शे दा र त से चो तं त्या ज म्मा भया कार क्त जोह सो ते ड थं व
ता हं दे वि त नी से के र अपर स्व वि पो अहं के नाथि पनी
प्रविश्य प्रवे स भय संपूर्ण देह मा प्रा प्रहं दन ॥२२॥ ॥ सा ३
त त ४ ता हं दे खो न त नु न्या हृदया चार मर ह्यो को रक्त रक्त जोह
सो नि खो दे हे सपूर्ण देह क न वजीवा के ला क नय पुन ४ फो म
पुष्क स म्म फो क सा क तो व सीत प्रवे श गदेह पुष्क सात फो क द
दे वि न्या रक्त जोह सो हृदय या तो हृदय धार म प्रा प्रि हं द र वं नो म
कार ले पुन ४ पुन ४ धार वारी कि या य लो का म गेह द न ॥२३॥ ॥
रुधि र हृदया धार रक्त को पुष्क व वे गे त ड फे का वे गे ल व म तो स
पू र्ण नाथे जोह सो मुह ४ वार वार स्पे द ते वर वर चले र हं द प्रक ते ४
नाथे को पुष्क व वे गे त ड फे का भेद ले स्पे द स्पे च नाथे व ल ना
को पनी ने द सा स्या त ने द हं द न भनी क न क हिया को ह
न ॥ ॥२४॥ ॥

धमं ना च नाशो हस्तं का पनो स्थो न्यादि स्थं लोमा
तार सुक्ष्म मसीनु आदि हुनु तनु पा प्रकुम्भ वि भावे
ले जायते हुं हनु तनु का रनु न्यो स्थुल सुक्ष्म आदि
नाशो हस्तं क न समासे तवा स्तार पूर्व काले बुद्ध नंद हहे
वत्स हे वायु नीला गय सुने कामगर ॥२५॥ ॥ ॥ ॥ ॥
अनादि को नाम कहिं ह हिं खादिं खा भेनु स्नायु स्नायु भेनु
वसा वसा भेनु नादि नादि भेनु धमनी धमनी भेनु धाम
नी धामनी भेनु धरा धामनु तनु को तं नु को भेनु जीवी
तजा वजीवी तजा भेनु पनी शीर शीर भेनु इती हह नाम जो
ह सो नादि का पर्याय वाचक को ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कि न कहिया को हनु ॥२६॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
तु हों काय नादि देह मा र ह्या की नादि जो दे सो श्री वो धा तो नू प्रका
र को दे नू कु नू कु नू भेने ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
म ग ह हनु अ नू अ नू नादि जो दे सो मुत्र पीसा व विह्वल अ
पीसा ह र स वादि नो स व हे दी नू अपरा अ को नादि जो दे सो
आहार वाह नो गते आहार व हे दी नू ॥२७॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कद म धे ना नी क द काम धे मा स्थितार ह्या की नादी
दि जो दे सो सर्व त सी पु नू नू पु नू पु नू पु नू नादि भनी
क न प्रकीर्ती ता कहिया को ह तत ता हो दे री अस्मी

तु व के यो ना नी च क ~~का~~ मा सर्वा नादि का सं पुर्न नादि
जो दे सो प्रीत चारों तर म फ पिष्ठं ते र ह्या की हनु भनी क न कह्यु
को हनु ॥२८॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नादि नी म धे ना नी च काम धे ना स्थो तार ह्या की नादि ने दे व जो
दे सो सर्व त सं पुर्न गो पु ह क तो गाई का पु ह र ज स्ता आ का ले फे
जा क न या र ह्या की ह ना नी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
इं दे व पु यो शरी र जो दे सो बा पं व्या प क भे र प्री त चारों तर फ ती च ने
र ह्या की ह भनी क न कह्यो को ह ॥२९॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दे हो ना मू दे ह धारी म नुष्य को ना द्य नादि जो दे सो स्थुल ला स्थु
ल नादि र सु क्ष्मा च सू क्ष्म नादि प नो हो नी च य ले सा द्या स्त्रि को
द्य ॥ सो ठ तो नू को दि ना दी हनु ना ॥ तो ना दी हनु जो दे सो ना नी
कं द नी व द्य ना नी च क मा वी धो य र ती र्य क ते र ह्या की मा थी
ति र अ च ॥ त ल तो र स्थिता र ह्या की हनु भनी क नी ह्या को ह ॥३०॥
यानी जौ न ति ह ॥ को द्यो दे को दि च सो ठ तो नू को र ह ना दी क दि
या को ह ता नी ते ती ने मा नुष्य म नुष्य ह का दे ह मा लो मा नी
रो म र ह्या को ह ता नी त्पे स्त्री नी सं पु न रो म ह का दि ह र जो
दे सो ना दि मुखानी ना दी ह का मुख ने नी कि न कहिया को ह
ते न्प ॥ ति ने ना दि ह का दी उं दे खी नू ध मी वी हुं नू प सि ना ह
हू को वि नू क न अ र तो च कु हिर ह्या को हनु ॥३१॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तासां तीनैसां ते तीन कोटि नादि हनु कामधमादि
 सपुत तो सहस्रं तु एक हजार वह तर बह नीये ॥३२॥ स्त्रु ला
 स्त्रु लाणा दो नती कन प्रकीर्ति ता कहिया कोट न ता ॥ १ ॥
 त्रैधमनी नाये हनु जो दसा दे हे सरीर मा धन्या वायु क
 नवहांड दह नती नै नाये द्वा पं चेद्रिय गुणा वहा पं
 चेद्रिय हनु को गुण हनु करण अर्थात् श्रवण स्पर्श रूप रस
 गंध इन्द्रिय कन वहा हनु ॥ ३२ ॥ ॥ ॥ ॥
 तासां व तीनै पैं कहिया का नादि हनु कामधमा सुक्ष्म
 सुसिगनी मसि तु दो प्रनया का स्वहा नी सुध नभा का
 सपुसता तो सात हये ॥ ३० ॥ नादि रखा कोट नय जो द
 नाये द्वा रत्न असकत वार वर अन्न रस अन्न कार स
 कनवही द्रव्य हनु अमी सांसे अन्न को स लेन
 र्णां मनुष्य हनु को इंदु वपु यो सरीर स जो दसा आ
 प्या यते पुष्प हनु यथा जे स अं भ सव दि ४ पा नी व
 गने नया का सिंधु सते ४ सै क दौ नरी हनु ते समुद्र
 इव समुद्र तृप्ति नया के तसे यो सरीर हनु त्रि हनु ॥
 ना नी पुं ४ स्थिते तना मो स्थान दे रिव न आरंभ गोर
 सा तसय नादि हनु ते आमस्त का दपी व मस्त के दो व
 रतीयर आ पा दत ॥ पैता ला स म्म अवे री गा वीर

पुगी शरीर करण प्रतन का पक भय रखा कोट हस्वी
 इने नादि हनु र व मं वयन संपुगी हनु ला हनु ने व
 डं वा धी या कोट यथा जे सै से ततया नृणां मनुष्य हनु
 को का र्प शरीर पनी इह ना हा शीर स तस प के न सात
 सय ना धे हनु ने वा धी या कोट ॥ ॥ ॥
 देही नी देह वारी मनुष्य को तो भी दे से ना भी स्थान मा
 कु मो के कहु का जो दसा तीर्य क तेर को नयर रखा को
 ह तस्य त्यो कहु वा को व के मुख ता वो म भागे वा जा ती
 र रखा कोट पुट न पुट र ता या मे दाहिने तीर रखा को
 ह तस्य च त्यो कहु वा को पनी वा मो ह ले पा दो वा जा
 हा त पा उ जो हे सो उई भागे मा थी तीर रखा कोट
 तस्य त्यो कहु वा को तो दक्षीणो त्यो दा ही ने हा त
 पा उ ॥ जो दसो अधस्ता त त नीर संधी तो रखा
 कोट ॥ ॥ ॥

तस्य त्यो कहु वा को व के मुख मा नादि रखा कोट तथा ते ले पु
 का ले पुट्टे पुट्टे मा नादि रखा कोट नादि रखा कोट को हात मा पञ्च पञ्च नादि
 रखा कोट पाँच पाँच पञ्च पाँच नादि रखा कोट ना प दिक्ष न भाग यो ना
 हा त पा उ मा पनी पञ्च पाँच २ नादि रखा कोट ॥ ४७ ॥ ॥ ॥

८१

देहा ना देह चारिमनुष्यको नादे नादे जो दुसो हिनया खोहक को वा
मे भोगे वात्रा हात पाउ नामा सो ज्या हेर नुवे सद पुं शरुं पुरु सको
ता दोखे ने दाहो ना ह्वे मोह नुवे सद इतो यसो दोवे हे पार वीत मयामेले
सर्व देह सुसंयुक्त देह चारिमनुष्यको प्रो मो कहो यो ५ ॥ ४८ ॥ ॥ ॥

॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

आ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 रूग्णा वधो ततो नादि मे सतां पथ्य मे वक् ॥
 दे संका ॥ न च पा वं व सो जाना तो स पंदिता ॥
 रघु नंद न से वी न तो य तणा दुष री द्रु ह मा री नी
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वार करे ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 हं स ह मा री नी वार करे ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

राग जेगला नील ॥ १०॥ ॥ ॥

५५
 ६५
 २३५
 ३०६
 ३३८५

म जल ए म नाम सुख द्या म ते र पुर न हो सक काम
 कामि जावे म थुर जावे ते र थ को रे त मान ॥ १
 जाये हि मा चेल को रे त प स्या न हो पावे वी स र म ॥
 ज ता र वा ए भू स्म र मा ये जंग ल को या सु काम ॥
 स र ची वं की ल वी मा जे म् पा दि त क ली उ रा म्

अ होमनाम भजन कै से लीना

मत्तु मत्तु निहाली म कहान गीद १७१-१९ कुँ न म डडिमुठट्ट
अवनही दुते एमएस हागा ॥ ५ ॥ मे एक प्रभू तुम थाकु
[हम दासी] ॥ अवनही दुते एमएस हागी ॥ ६ ॥

राग काली ॥ मन्त्र लाई जाई वेँ अमार पान लाई जाई वेँ ॥ ही क
फाला चीकन खान गले लुट्ट माला ॥ मन ० ॥

20
15
10
5
0

स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय
 जगन्मोक्षाय नमो भगवते वासुदेवाय

स्वस्ति श्रीसर्वोपमाजोगपत्मापिपकलगुरागरीसुरज
 राजभासुरसामर्थ

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----

सर्वे सुखे
 ३५५ न
 सर्वे सर्वे इहलोके सुखसुखे शाप
 नपिन पापलनयतो नोतद्व

स्वस्ति श्रीसर्वोपमाजोगपत्मापिपक
 ललगुरागरीसुरज
 जगन्मोक्षाय नमो भगवते वासुदेवाय
 नमो भगवते वासुदेवाय

स्वस्ति श्रीसर्वोपमाजोगपत्मापिपकलगुरागरीसुरज

स्वस्ति श्रीसर्वोपमाजोगपत्मापिपक
 ललगुरागरीसुरज

गान
 केकी
 सज्जो

स्वस्ति श्रीसर्वोपमाजोगपत्मापिपक

0 C.MS 5 10 15 20 25 30

শিবচন্দ্র সিন্ধা প্রিন্টার্স কলিকাতা



Use **K.N. MITTRA'S**
BLUE BLACK & RED
WRITING FLUID.
 The best in the Market.



SHIB CHANDRA SINGHA

No. 168, Old China Bazar Street Calcutta.

Wholesale and Retail Stationer and Importer of Stationery and Manu-
 facturer of Account and Exercise Books Importer of Stationers,
 Writing Ink, Blotting Paper, John & W. Faber's Lead Pencils,
 Fountain & Stylo Pens, Nibs, Blanks & Fancy Holders, Inkpots,
 Erasers &c., &c.

ESTD 1914-1311 B.C.
 Order Should accompany remittance at least of
 One fourth of the value of the articles.

CLASS ROUTINE.

	1st Hour	2nd Hour	3rd Hour	4th Hour	5th Hour	6th Hour
Mon.	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫
Tues.	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫
Wed.	১৪৫	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫
Thurs	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫
Fri.	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫
Satur.	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫	২৫

20
15
10
5